स्वच्छ गाँव सुन्दर देश

स्वच्छ पर्यावरण - आप और आपका गाँव

पर्यावरण संरक्षण
आपका दायित्व

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद्

बेल्ट्रॉन भवन, शास्त्रीनगर, पटना – 800 023

दूरभाष सं०- 2281250 / 2282265 / 2291709, फैक्स–0612-2281050

ई.मेल–bspcb @ vsnl.net बेबसाइट–http://bspcb.bih.nic.in

स्वच्छ वायु, शुद्ध पानी और साफ-सुथरी जमीन एक स्वच्छ पर्यावरण की पहचान है। इसके कुछ नैसर्गिक, भौतिक, रासायनिक एवं जैविक गुण हैं, जिसमें हानिकारक परिवर्त्तन के कारण पर्यावरण दूषित होता है, जिसके कारण मनुष्यों, जीव-जन्तुओं एवं पेंड़-पौधों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

बढ़ती आबादी तथा उपलब्ध प्राकृतिक संपदा जैसे-जमीन, जंगल, भूगर्भीय जल आदि का दुरूपयोग ही पर्यावरण असंतुलन का मुख्य कारण है। भूमि के अवैज्ञानिक उपयोग से उत्पादकता में कमी आयी है। गोबर खाद के बदले अब रासायनिक खाद का अधिकतम प्रयोग किया जा रहा है। वनों की कटाई एवं असामयिक वर्षा के कारण बाढ़ एवं सूखे का प्रकोप बढ़ रहा है। ढालू जमीन जोत में लेने से मिट्टी बहकर नदी-नालों को भर रही है । जमीन बंजर बन रही है। हमारी अधिकांश नदियों, तालाबों इत्यादि का जल पीने योग्य नहीं रह गया है। वस्तुस्थित इतनी तेजी से बिगड़ रही है कि मानव जाति का अस्तित्व खतरे में पड़ गया लगता है। इस स्थिति से निपटने के लिए आज पर्यावरण संरक्षण की ओर ध्यान देना अति आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण में प्रत्येक नागरिक का योगदान अपेक्षित है।

कृषि रसायनों का हो सही मात्रा में उपयोग:

खेतों में कीटनाशकों/उर्वरकों का उपयोग सही मात्रा में करना चाहिए। इन रसायनों का अनावश्यक उपयोग पर्यावरण को दूषित करता है जिससे पर्यावरण के अन्य घटकों पर कुप्रभाव पड़ता है।

जैविक खाद यथा कम्पोस्ट, ढ़ैंचा, सनई इत्यादि का प्रयोग बढ़ाते हुए रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे खेतों की उर्वरा शक्ति भी बनी रहे तथा अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से भूगर्भीय जल एवं नदी-नालों का जल भी प्रदूषित न हो।

ढालू जमीन की सतह की उपजाऊ मिट्टी वर्षा के कारण बहकर नदी-नालों में जा गिरती है जो नदियों के तल को ऊँचा कर देती है। फलत: नदियों में जल-ध रण की क्षमता कमी है तथा बाढ़ आने की संभावना बढ़ती है। अत: ढालू जमीन पर मिट्टी का बहाव रोकने के लिए सघन वृक्षरोपण करना चाहिए ताकि जड़ें मिट्टी को बांधकर रख सके।

शुद्ध हो पेयजल :

प्राय: देखा जाता है कि गाँव की एक बड़ी आबादी जल से संबंधित रोगों जैसे–पेचिश, डायरिया, टाइफायड, पीलिया इत्यादि से ग्रसित रहती है। गाँवों में पेयजल का मुख्य स्रोत कुआँ ही होता है जो प्राय: गोशाला, पोखरा इत्यादि से कम दूरी पर पाया जाता है। ऐसे कुएं कम गहराई के तथा बिना मुंडेर के होते हैं। फलस्वरूप, ये सतह पर बहने वाले दूषित जल से भी प्रदूषित होते हैं। अत: यह आवश्यक है कि गाँवों में कुओं का निर्माण पोखरे, तालाब, गोशाला आदि से करीब 200 मीटर की दूरी पर किया जाय, साथ ही कुओं का मुंडेर सतह से एक फीट ऊँची हो।

स्वच्छ रहे तालाब :

प्राय: यह देखा जाता है कि जिस तालाब में ग्रामीण स्नान करते हैं उसी में मवेशियों को धोया जाता है तथा गंदे कपड़ों की सफाई भी की जाती है। इस प्रकार उस तालाब का जल प्रदूषित हो जाता है। इसके जल से स्नान करने से चर्मरोग होने की संभावना रहती है। अत: जिस तालाब का प्रयोग स्नान करने में किया जाता हो, उसका यथासंभव दूसरे कार्यों के लिए प्रयोग न किया जाना ही श्रेयस्कर होगा। समय–समय पर तालाब की सफाई भी करानी चाहिए।

घरेलू गंदे पानी और कचरों का सस्ता हल :

गाँव में खाना पकाने, कपड़े धोने और नहाने का गंदा पानी घर के आंगन में, बाहर सड़कों पर, खुली जगह से बहते हुए गड्डों, पोखरों में जमा होता है, जिससे मच्छर एवं अन्य घातक कीड़े पैदा होते हैं। इनसे हैजा, पीलिया, मलेरिया, हाथी–पांव(फाइलेरिया) इत्यादि खतरनाक बीमारियां फैलती हैं। बर्त्तन एवं कपड़े धोने के लिए एक चबूतरा और इसके पास पानी–टंकी लगानी चाहिए। बर्त्तन मांजने के लिएइस्तेमाल की गयी मिट्टी, राख, रेत, जूठन, फल–सब्जियों के छिलके आदि का सही ढ़ंग से निपटान करना चाहिए, जिससे वे खाद बन जायें। कहीं पर भी गंदे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।

साफ–सुथरे गाँव :

गाँवों में प्राय: सफाई का नितांत अभाव देखा जाता है। गंदे जल का बहाव नालियों के माध्यम से ठीक तरीके से नहीं होने के कारण मल–मूत्र इत्यादि का

सही ढ़ंग से सफाई न होने के कारण भूमि, जल और वायु प्रदूषित हो जाते हैं, जिसके कारण हैजा, पेचिश इत्यादि रोग फैलने की संभावना रहती है। इन रोगों का सबसे अधिक प्रभाव स्त्रियों, बच्चों एवं बूढ़ों पर पड़ता है। खुले में शौच जाने से खेत की मिट्टी प्रदूषित रहने की संभावना रहती है। जमीन के अंदर उपजायी जानेवाली सब्जियां अथवा फसल जैसे–आलू, प्याज, शंकरकन्द, गाजर, मूली आदि बिना उचित सफाई किये खाने से ग्रामीण कई प्रकार के पेट के रोगों से ग्रसित रहते हैं। ऐसी मिट्टी में नंगे पैर चलने से भी वे हुकवर्म, राउण्डवर्म इत्यादि से ग्रसित हो सकते हैं।

इन सबसे बचने के लिए सबसे पहले खुले में शौच जाने की पुरानी आदत को छोड़ना होगा। घरों में शौचालय की व्यवस्था करनी होगी। मल–मूत्र का निपटान इस तरीके से करना होगा जिससे प्रदूषण और गंदगी न फैले।

स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप अनेक प्रकार के सस्ते शौचालय का निर्माण किया जा सकता है। ऐसे शौचालय के लिए ज्यादा जगह की जरूरत नहीं होती। गाँव में घर के आंगन में इसके लिए आसानी से जगह निकाली जा सकती है।

वृक्षरोपण :

हमारी वन–संपदा का आवश्यकता से अधिक दोहन हो रहा है। वन पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। वृक्ष समस्त जीवधारियों को ऑक्सीजन देती है बदले में हानिकारक कार्बन डाइऑक्साइड का अवशोषण करती है। सभी खुली जगहों पर आप तरह–तरह के वृक्ष लगायें जिससे चारा, जलवान, इमारती लकड़ी सभी की आवश्यकता पूरी हो सके। पौधे नजदीक के पर्यारण एवं वन विभाग की नर्सरी से प्राप्त कर सकते हैं।

''आओ हम सब मिल करें प्रयास,
शुद्ध हो जल व स्वच्छ हो आकाश
शोर रहित हो अपना संसार।''

बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद् द्वारा
जनहित में प्रकाशित एवं प्रसारित।
1000 प्रतियाँ / जून 2011
मुद्रक : **तरंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स प्रा॰ लि॰**, शिवपुरी, पटना–23